गुर्जर इतिहास एवं साहित्य

रामफूल गुर्जर,
सहा. निदेशक(जन संपर्क)
जयपुर, राज.
(मो.)8875002802

किसी भी देश, प्रदेश, क्षेत्र एवं समाज का इतिहास उसकी संस्कृति, सभ्यता, भाषा–भूषा व समय–समय पर घटित घटनाओं का बही खाते का निचौड होता हैं और ये ही भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत होता हैं। इसी से प्रेरणा लेकर बच्चे, युवा विशेष रूप से अपने वर्तमान और भविष्य को ढालने में सफल हो सकतें हैं। महाराजा दशरथ के चार पुत्र – राम, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न हुए।

महाराज दशरथ के लिए 'गुरूतर' विशेषण का प्रयोग हुआ हैं जिसका अर्थ 'बडा' किया है। यही बाद में 'गुर्जर' शब्द में परिवर्तित हो गया। अतः महाराज दशरथ के वंश के लोग 'गुर्जर' कहलाए। राजा रामचन्द्र के दो पुत्रों – लव और कुश के वंश नाम अलग तथा लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के वंशजों के भी अलग–अलग नाम पडते चले गए। प्रसिद्ध इतिहासकारों की मान्यता के अनुसार इतिहास पुस्तकों में वर्णित प्रसिद्ध राजवंश कुषाण राम पुत्र कुश के वंशज तथा प्रसिद्ध गुर्जर प्रतिहार वंश लक्ष्मण के वंशज हैं। भरत और शत्रुघ्न के वंशज गुर्जरों में अनेक गोत्र व खापों में विद्यमान हैं। परन्तु एक साजिश व साथ ही अनभिज्ञता के कारण कुषाणों को विदेशी और अनार्य कह डाला। गुर्जरों को आक्रमणकारी लिख दिया। कुषाणों को गुर्जर न कह कर अलग जाति लिख डाला आदि–आदि। इन मिथ्या और अनर्गल बातों ने भारतीयों को वास्तविक इतिहास से दूर हटाने का बडा काम किया। आर्यों को विदेशी लिखा गया अर्थात हमारे पूर्वजों को विदेशी लिखा। फलतः हम भी विदेशी हुए। भारत में महाभारत व पुराण हमारे हमारे इतिहास ग्रन्थ हैं। अरबी और अंग्रजी लेखकों ने यहां का सुना हुआ व कुछ भ्रमण कर देखा इतिहास लिखने का प्रयत्न किया जिसमें उन्होंने अधिकांश जानबूझ कर तथा कुछ कम जानकारी के कारण गलत लिखा। आगामी लेखकों ने उसको आधार बनाकर लिख डाला जिससे अनेक विकृतियां पैदा हुई। वास्तविक तथ्य यह है जिस पर अब विद्वान इतिहासकार

सहमति प्रकट करते हैं कि अयोध्या से सभी दिशाओं में यह राजवंश फैलते गए। विस्तार भय से इतना ही बताना चाहूंगा कि इनमें से अनेक वंश मध्य एशिया तथा कैस्पियन व काला सागर तक फैले जिनका पुराणों आदि में विभिन्न नामों से उल्लेख हैं। कुछ कबीले नेपाल के रास्ते वर्तमान चेचन्या गये। चीनी भाषा में इन्हें 'यूहेची' (बहुत बड़े) कहा। इन्हीं कबीलो में से कुषाण थे। वहां की जातियों विशेषकर मंगोली हूणों से संघर्ष के बाद पश्चिम की ओर गए तथा फिर दक्षिण की ओर मुड कर पुनः भारत में प्रवेश किया। मध्य एशिया तक फैले गुर्जर परिवार आज भी इसका सबूत पेश करतें हैं जिनमें चेची, कुषाण आदि गुर्जरों के गोत्र विद्यमान हैं। भारत में प्रवेश के समय यहां रह रहे लोगों ने इनको शक (बहुत बहादुर) कहा। यह उल्लेखनीय है कि वैदिक – हिन्दु पवित्र कार्यों में जब मंत्रो व श्लोकों का उच्चारण करते हैं तो सृष्टि सम्वत् के बाद शक सम्वत् तथा फिर विक्रम सम्वत् का उल्लेख किया जाता हैं। यदि ये शक (गुर्जर वंशीय) आक्रमणकारी थे तो इनका उल्लेख यंहा नही होता। कुछ लोगों ने हमको भ्रमित किया क्योंकि हम गुर्जरों को विदेशी कह डाला तो निश्चित रूप में हमारे आराध्य राम, श्रीकृष्ण आदि को भी ऐसा कहने से कोई नही बचा सकेगा। इन बातों पर विचार करने के उपरान्त ऐसी विदेशी साजिशों को समाप्त करने के लिए विद्वानों ने प्रयास किया और वे काफी हद तक सफल हुए। आज इस सत्य को बडी संख्या में विद्वान इतिहासकार स्वीकारने लगे हैं कि कुषाण गुर्जर हैं और ये गुर्जर सूर्यवंशी क्षत्रीय आर्य हैं जो इसी भूमि के मूल निवासी तथा राम, लक्ष्मण आदि सूर्यवंशी राजाओं की संतान हैं।

9 व 10 जुलाई सन् 1994 में भारत की राजधानी दिल्ली में गुर्जर इतिहास पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 'गुर्जर और उनका इतिहास में योगदान' विषय पर उपरोक्त तथ्यों पर खोज पूर्ण चर्चा के लिये किया गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त इतिहासकार स्व. डॉ. बैजनाथ परी ने किया था तथा अध्यक्षता प्रसिद्ध इतिहास विद्वान स्व. श्री अली हसन चौहान (पाकिस्तान) ने की थी। मुख्य अतिथि पूर्व राष्ट्रपति स्व. श्री ज्ञानी जैल सिंह पधारे थे। समापन समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध साहित्यकार व यायावर इतिहास के ज्ञाता पदमश्री डॉ. श्यामसिंह 'शशि' ने की थी तथा मुख्य अतिथि प्रो. रविन्द्र कुमार,

अध्यक्ष भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, दिल्ली थे। इस सम्मेलन में भारत, पाकिस्तान व कनाडा से लगभग 200 प्रतिनिधियों ने भाग लेकर अनेक गूढ़ विषयों पर चर्चा की थी। सम्मेलन में प्रस्तुत किये 18 शोध पत्रों ने ऊपर लिखी सभी भ्रान्तियों को समाप्त किया तथा गुर्जरों की व्यापार, विज्ञान, साहित्य व शिक्षा क्षेत्र में अनमोल देन पर प्रकाश डाला। ये शोध पत्र पुस्ताकाकार में मीनाक्षी प्रकाशन अजमेर(राजस्थान) द्वारा प्रकाशित किये गए। इस सम्मेलन तथा प्रकाशन से इतिहासकारों की सोच में कुछ परिवर्तन आया और गुर्जरों के बारे में शोधकार्य ने और तेजी पकड़ी। इससे उत्साहित व आशान्वित होकर 17–19 नवम्बर, 2000 में दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय इतिहास सम्मेलन ऐतिहासिक नगरी कुरूक्षेत्र (हरियाणा) में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन अन्तर्राष्ट्रिय ख्याति प्राप्त विद्वान पत्रकार व इतिहासकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने किया था। कॉन्फ्रेन्स के मुख्य अतिथि केन्द्रिय गृह राज्य मंत्री श्री आइै.डी. स्वामी थे। तथा अध्यक्षता स्व. श्री अली हसन चौहान ने की थी। समापन समारोह में यू.जी.सी के जॉईंट सक्रेटरी डॉ. एस. एन गुनगुडे व एच.आर.डी. में अवर सचिव श्री एल.आर. अग्रवाल पधारे थे। अध्यक्ष्ता प्रो. आर. के शर्मा ने की थी तथा आई.सी.ए.आर के महानिदेशक डॉ. करण सिंह भी पधारे थें।

यह पूरी तरह स्पष्ट है कि यदि भारत के इतिहास में से गुर्जरो का इतिहास (100 बी सी से 1300 ए डी तक) निकाल दिया जाए तो कुछ बचता ही नहीं सिवाय विदेशियों (मुगलों, अंग्रेजों) के गुणगान के।

किन्तु हमें वर्तमान को भी देखना होगा। आजादी के 69 वर्षों के बाद भी हमारे समाज की स्थिति अभी भी दयनीय बनी हुई हैं। प्रशासनिक सेवाओं में हमारी संख्या नगण्य हैं। जबकि फिजूलखर्ची एवं अन्धविश्वासों में हम सबसे बढ़कर हैं। मानो सारे धर्मों के हवन–कुण्ड, कलश व पद–यात्रा सैकडो गांवो को बुलाकर सामूहिक जीमण, जो गुर्जर छात्रावास केवल बच्चों की पढ़ाई व उनके उज्जवल भविष्य के काम आने चाहिए वहां गौ माता सम्मेलन, सामूहिक विवाह सम्मेलन एवं बिना मतलब के फालतू पटेलाई का क्या औचित्य हैं। बच्चों की शिक्षा व पहनावें के लिए पैसा नही और नुक्ता, दहेज व धार्मिक आडम्बर के तहत कई दिनों तक कई

गांवो के छत्तीस कौमों को जीमाणा, उपहार देना जैसे फिजूलखर्ची का ठेका जैसे हमनें ही लिया हों। सबको विदित है कि समाज में शिक्षा का जो स्तर बढ़ना चाहिए था वह नही बढ़ा। यह हमारे लिए चिन्तनीय हैं।

गुर्जर कौम हमेंशा देश भक्त व बहादुर रही हैं। देश की सरहदों पर डटें सैनिको पर हमें गर्व हैं। एवं शहीदों को सच्ची श्रद्धांजली हैं व पूरे देश को ऐसे वीर सपूतो पर नाज़ हैं। जब कभी पाकिस्तान सीमा से गोली चलती हैं तो वह सबसे पहले हमारे गुर्जर भाई के सीने में लगती हैं। चाहे वह मुस्लिम गुर्जर हो या सरदार गुर्जर, वह सबसे पहले भारतीय हैं।

****